ISSN : 2581-8872 Vol - 1, No. - 10 Nov. - 201

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research

Peer Reviewed - Refereed Journal
Impact Factor - 3.2, Open Access,
Double Blind, Monthly Online Journal

Google scholar | ISRS International Scientific Research Solution | Indian Tech | GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

EDITOR
PRASHANT KUMAR
PUBLISHED BY
International Scientific Research Solution
Web : www.isrs.in
Email : ncrd2016@gmail.com

Scanned with Oken Scanner

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	भारत में कृषि विपणन की वर्तमान अवस्था	डॉ. पंकज नेमा	1-9
2	जनजातीय क्षेत्र बड़वानी जिले में भूमि उपयोग स्वरूप का अध्ययन	रानी वास्केल	10-11
3	बुंदेलखंड के कालिंजर का वास्तुशिल्प	प्रियंका पाण्डेय	12-13
4	सामाजिक चुनौतियाँ और जीवन मूल्य	प्रीती सिंह	14-17
5	दक्षिण पूर्व कोयला प्रक्षेत्र कोरबा में श्रमिकों में मनोबल और अनुशासन	डॉ. प्रतिमा बैस प्रो. आशा राय	18-21
6	यज्ञ विज्ञान में ज्योतिष का वैशिष्ट्य	डॉ. मानवेन्द्र पाण्डेय	22-26
7	जयपुर जिले की मलिन बस्तियों की समस्या एवं समाधान : एक भौगोलिक अध्ययन	प्रिय भूषण यादव	27-31
8	आजीवन सीखना : विकास की अवस्थाएँ	अपर्णा श्रीवास्तव	32-34

Scanned with Oken Scanner

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research, U.I.J.M.S.R.
Peer Reviewed - Refereed Journal & Impact factor - 3.2, Open Access, Double Blind, Monthly Online Journal
ISSN : 2581-8872, Vol. : 1, No. : 10, Nov. - 2019
2019

आजीवन सीखना : विकास की अवस्थाएँ

अपर्णा श्रीवास्तव
अतिथि सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्रस्तावना :– जीवन में सीखने की प्रक्रिया सदैव चलती रहती है अर्थात आजीवन सीखना इसलिए मानव अपने जन्म से मृत्यु पर्यन्त कुछ न कुछ सीखता रहता है। जन्म के बाद बच्चा अपने आप को एक विशेष प्रकार के भौतिक वातावरण में पाता है। उसकी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति इस भौतिक/सामाजिक वातावरण के अंदर होती है। इस प्रकार के अनुकूल के लिये गत अनुभवों द्वारा अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। अपने अनुभवों द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाना सीखना कहलाता है। बालक अपने जीवन के हर पड़ाव पर, हर स्थिति में हर समय हर जगह कुछ न कुछ सीखता है और इस सीखने के द्वारा वह अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। अपने आने वाले जीवन मे कई समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेता है। साथ ही अपने आस–पास के वातावरण से समायोजन स्थापित करता है। एक बालक जब जन्म लेता है तब वह नये परिवेश में आता है तथा उसे उसके परिवार के सदस्यों से कई सारी चीजे लेता हैं तब वह नये परिवेश में आता है तथा उसे उसके परिवार के सदस्यो से कई सारी चीजे सीखने को मिलती है, जैसे बोलना, चलना, खाना, पीना, प्रेम स्नेह आदर, क्रोध, लड़ना झगड़ना आदि व्यवहार यदि इन व्यवहारों में से कोई व्यवहार अमान्य होता है और बालक उस अमान्य व्यवहार को करता है तो उसे अमान्य व्यवहार के लिये परिवार सदस्यों द्वारा नकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त होती है। जिससे वह असामान्य हो जाता है, परंतु जैसे ही वह अपने अमान्य व्यवहार में परिवर्तन कर लेता है तो उसे परिवार के सदस्यों द्वारा प्रेम तथा स्नेह प्राप्त होने लगता है, ठीक इसी प्रकार चाहे स्थिति सामान्य हो अथवा असमान्य मानव हर समय आजीवन सीखता चला जाताहै तथा अपने सीखे अनुभवों से लाभ उठाता चलता है। ये अनुभव सुखद तथा दुःखद दोनों तरह के हो सकते हैं। इस प्रकार अनुभवों के आधार पर अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है, जैसे–जैसे वह अनुभव के आधार पर नवीन बाते सीखता जाता है वैसे–वैसे ही आवश्यकतानुसार अपने अनुभवों को संगठित करता चला जाता है अतः कहा जा सकता है कि–

"सीखना अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है"

गेट्स व अन्य

इसी प्रकार वुडवर्थ ने ठीक लिखा है कि –

"सीखना विकास की प्रक्रिया है। अर्थात सीखना सिखाना आजीवन चलता है।"

सीखना : विकास की अवस्थाएं :–

1. **शैशवास्था : 0–5 वर्ष :– जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल** – जन्म से लेकर पांच वर्ष तक की आयु को शेशवास्था के नाम से जाना जाता है। जन्म के समय बालक की लंबाई 20.5 इंच तथा भार 2.5 किलो से 4 किलो होता है। इस आयु में बालक पूर्णतः पराश्रित रहता है, उसे अपने विकास के लिये माता–पिता व परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहना पड़ता है।

इस अवस्था का अपना अलग महत्व है, क्योंकि सीखने की साक्षात प्रक्रिया यहां से प्रारंभ होती है जब बालक जन्म लेता है तथा अपने आस–पास के वातावरण और अपने बड़ों से सीखना शुरू करता है। इस काल में बालक जिज्ञासु प्रवृति का होता है तथा अपने आस–पास के वातावरण को स्वयं जानने का प्रयास करता है।

वह अपने से बड़ों से शब्द वाचन आदि क्रियाओं का सीखता है तथा इस काल में बालकों में अनुकरण की प्रवृति अधिक पायी जाती है।

इस काल में बालक जिज्ञासु होते हैं तथा उनके लिये शिक्षा ऐसी हो जो उनकी जिज्ञासा को शांत कर सके। उनमें सीखने की प्रबल इच्छा होती है। जिसे एक शिक्षक के नाते इस जिज्ञासा को रचनात्मक कार्यों के प्रति मोड़ देना चाहिए। इन्हें दंड/भय से दूर रखा जाये। बालक खेल में आनंद प्राप्त करता है तो उसे खेल–खेल में शिक्षा प्रदान करने का आयोजन किया जाना चाहिए। इसी कारण नर्सरी, मांटेसरी, किंडरगार्डन जैसी पद्धति वाले विद्यालयों के अधिक से अधिक

Scanned with Oken Scanner